ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की भारतीय भाषाओं (इण्डियन लेंग्वेजेज) की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष-15 अंक : 3 (पूर्णांक - 59) सितम्बर-नवम्बर, 2021

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

UGC-Cell for Journal Analysis

UGC-CARE List

You Searched for "Indian Languages" Total Journals : 114

Search

Sr. No.	Journal Title	Publisher	ISSN	E-ISSN	Action
61	महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका	Maharashtra Sahitya Parishad	2456-656x	NA	View
62	मीरायन	Meera Smriti Sansthan	2455-6033	NA	View
63	मुक्त शब्द	Mukta Shabd	2347-3150	NA	View
64	युगवाणी	Vidarbh Sahitya Samgh	NA	NA	View
65	राजभाषा भारती	Department of Official Language Ministry of Home Affairs, Government of India	NA	NA	View
66	राधा कमल मुकर्जी: चिन्तन परम्परा	Samaj Vigyan Vikas Sansthan	0974-0074	NA	View
67	ललित	Majestic Prakashan	NA	NA	View
68	ललित कला	Lalit Kala Akademi	0458-5386	NA	View
69	वाक्यार्थभारती	Rashtriya Sanskrit Sansthan	2249-538x	NA	View
70	वाग्वै ब्रह्म	Rashtriya Sanskrit Sansthan	2457-0729	NA	View

Copyright (c) 2019 Savitribai Phule Pune University. All Rights reserved. Disclaimer

12. रमणीक मोहिनी, तलवाड़ा, होशियारपुर (पंजाब)
श्री रामचरित मानस में व्यंग्य 56–61

7. संस्कृति-कलापक्ष

13. डॉ. प्रीति पाण्डे, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
ताम्रपाषाणिक मालवा पात्र परम्परा : 62–65
मालवा परिक्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में।

14. श्री ललित शर्मा, झालावाड़ (राजस्थान)
अजमेर से झालावाड़ आयीं शिल्प धरोहर 66–73

15. डॉ. अम्बिका ढाका, बीकानेर (राजस्थान)
दलहनपुर का अप्रकाशित अद्‌भुत बहुलिंगयुक्त योनिपट्ट 74–77

16. डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई (तमिलनाडु)
स्थानकवासी जैन परंपरा में चित्र व चित्रकला 78–82

8. भाषा/साहित्यपक्ष

17. डॉ. रामविनोद रे, कासरगोड (केरल)
केन्द्रीय भाषाई संस्कृति और अर्थव्यवस्था 83–91

18. डॉ. सुप्रिया के.पी., तलश्शेरी-कन्नूर (केरल)
समकालीन पर्यावरणीय कविता का जैविक अवबोध 92–96

19. प्राची तिवारी, दिल्ली
'आवारा मसीहा' में शरतचन्द्र के स्त्री पात्र 97–100

20. डॉ. शेफालिका पालावत, जयपुर (राजस्थान)
छायावाद का आधार-स्तम्भ : 'आँसू' 101–103

9. समीक्षणपक्ष

21. श्री ललित शर्मा, झालावाड़ (राजस्थान)
लोकस्मृति के आलोक में
'बुन्देलखण्ड के भित्ति चित्र' ग्रन्थ 104–107

10. पाठकदीर्घा 108–112

दलहनपुर का अप्रकाशित अद्भुत बहुलिंगयुक्त योनिपट्ट

- डॉ. अम्बिका ढाका

दलहनपुर पुरास्थल राजस्थान के झालावाड़ जिले में झालावाड़ से 54 कि.मी. की दूरी पर छापी नदी के बांध के वाम भाग में स्थित है। पुरास्थल के पुरातात्विक महत्त्व को देखते हुए इस स्थल के पुरावशेषों को राजस्थान के पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा वर्ष 2008 में संरक्षित घोषित किया गया। जनश्रुति के अनुसार इस स्थल पर देलाशाह का शासन था। जिस प्रकार से काकूनी पुरास्थल के पश्चिम में परवन नदी के पार भीमगढ़ में भीमाशाह का शासन था। दलहनपुर पुरास्थल पर क्षतिग्रस्त व विध्वंस को प्राप्त अनेक भवन व देवभवन हैं। यहाँ के पुरावशेषों का वर्तमान सदी के प्रथम व द्वितीय दशक में राजस्थान सरकार के पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा संरक्षण व जीर्णोद्धार कार्य करवाया गया है। दलहनपुर के पुरावशेषों का शिल्प व कला के आधार पर इनकी संरचना का समय 10वीं शती ई. से 13वीं सदी ई. के अन्त तक निर्धारित किया जा सकता है। इस स्थल की संरचनाओं का यह मुख्य समय रहा है। वैसे इस स्थल पर 16-17वीं सदी ई. तक भी कुछ लोग निवास करते रहे हैं।

वर्ष 2008 में दलहनपुर पुरास्थल के पुरावशेषों की एक विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट वास्तुविद मेसर्स मीनाक्षी जैन से राजस्थान के पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा बनवाई गई थी। उक्त प्रोजेक्ट रिपोर्ट में एक देवालय के अधिष्ठान को मंडप नं. 3 के नाम से पृष्ठ संख्या 16 पर उसकी तल छंद योजना के साथ दर्शाया गया है। इस देवालय के अधिष्ठान के वायुकोण पर करीब 10 मीटर की दूरी पर एक बहुलिंगयुक्त विशाल योनिपट्ट का पृष्ठवर्ती अर्द्धभाग भूतल पर पड़ा हुआ है तथा यह कुछ क्षतिग्रस्त भी है। इसी देवालय के (मंडप नं. 3) अधिष्ठान के ईशान कोण पर पास में इस विशाल लिंगयुक्त योनियुक्त पट्ट का अन्य उत्तराभिमुख अर्द्धभाग (चित्र-1) भूतल पर पड़ा हुआ है।

यह कहना युक्तिसंगत होगा कि प्रोजेक्ट रिपोर्ट के पृष्ठ सं. 16 का मंडप नं. 3 जो देवालय का वर्तमान में अधिष्ठान मात्र ही है उसके गर्भगृह में यह विशाल बहुलिंगयुक्त योनिपट्ट किसी समय प्रतिष्ठित रहा होगा। यह सामान्य बात है कि जब किसी देवालय का विध्वंस किया जाता है तो उसकी वास्तु व शिल्प सामग्री उसके निकटस्थ स्थल पर ही गिरेगी। अतः इस तर्कयुक्त आधार पर इस विशाल बहुलिंगयुक्त योनिपट्ट का सम्बन्ध, मंडप नं. 3 के देवालय के साथ स्थापित किए जाने में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जाना चाहिए।

चित्र-1: लिंगयुक्त योनि का अर्द्धभाग

समूह रूप में लि... स्थापित किये जाने ... पौराणिक परम्परा के ...